ध्येयIAS®
most trusted since 2003
DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims
20 November 2024

स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स की रिपोर्ट

सन्दर्भ: हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित राष्ट्रीय टास्क फोर्स (NTF) ने रिपोर्ट जारी की है जिसमे कहा गया है कि भारत में स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की सुरक्षा के लिए नए केंद्रीय कानून की आवश्यकता नहीं है। यह टास्क फोर्स कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर के साथ हुए रेप और मर्डर के मामले के सन्दर्भ में बनायीं गयी थी।

एनटीएफ रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

- **नए केंद्रीय कानून की आवश्यकता नहीं:**
  - » एनटीएफ ने निष्कर्ष निकाला कि स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा के लिए अलग से केंद्रीय कानून की जरूरत नहीं है। टास्क फोर्स का मानना है कि राज्य के कानूनों में पहले से ही चिकित्सा पेशेवरों के खिलाफ अपराधों से निपटने के लिए पर्याप्त प्रावधान हैं।
  - » गंभीर या जघन्य अपराधों के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 144 ए (क) के तहत मामला दर्ज किया जाता है। न्याय संहिता, 2023 (बीएनएस), जिसे नई दंड संहिता के रूप में भी जाना जाता है, का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।
- **राज्यों में पर्याप्त कानून:**
  - » भारत में 24 राज्यों ने स्वास्थ्य पेशेवरों के खिलाफ हिंसा से निपटने के लिए कानून बना रखे हैं और दो अन्य राज्यों ने इस संबंध में विधेयक पेश किए हैं।
  - » यह कानून छोटे-मोटे अपराधों को भी कवर करते हैं और ऐसे कृत्यों के लिए विशेष दंड का प्रावधान करते हैं।
  - » चिकित्सा पेशेवरों के खिलाफ हत्या, हमला और बलात्कार जैसे बड़े या जघन्य अपराध बीएनएस के अंतर्गत कवर किए जाते हैं।
- **समाधान के रूप में बीएनएस:**
  - » भारतीय न्याय संहिता का उपयोग उन राज्यों में स्वास्थ्य पेशेवरों के खिलाफ हिंसक अपराधों से तत्काल निपटने के लिए किया जा सकता है, जहां कोई विशिष्ट कानून नहीं है।
  - » एनटीएफ का मानना है कि बीएनएस चिकित्सा कर्मियों के खिलाफ जघन्य अपराधों को पर्याप्त रूप से संबोधित करता है और नया कानून अनावश्यक है।
- **मूल कारकों की पहचान और समाधान:**
  - » एनटीएफ ने चिकित्सा पेशेवरों और मरीजों के परिवारों के बीच खराब संचार को हिंसा का एक प्रमुख कारण बताया है।
  - » प्रभावी संचार की कमी के चलते अक्सर अविश्वास, हताशा और भीड़ द्वारा हिंसा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
  - » स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की सुरक्षा और समग्र सुरक्षा में सुधार के लिए सरकारी पहलों के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

एनटीएफ रिपोर्ट की सिफारिशें

राष्ट्रीय टास्क फोर्स (एनटीएफ) ने देश भर के 53 से अधिक संघों और 1,700 अस्पतालों के साथ परामर्श के आधार पर अपनी सिफारिशों को अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक उपायों में विभाजित किया है:

- **अल्पकालिक उपाय:**
  - » अस्पतालों में प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मियों की तैनाती।
  - » खतरों पर त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने हेतु स्थानीय पुलिस के साथ समन्वय।
  - » स्वास्थ्य कर्मियों के खिलाफ हिंसा के मामलों में एफआईआर दर्ज करने की प्रक्रिया में तेजी, जिसमें यह सुनिश्चित करना कि छह घंटे के भीतर एफआईआर दर्ज की जाए।
  - » अस्पताल परिसर के चारों ओर सीसीटीवी कैमरे लगाने और ऊंची दीवारें बनाने जैसी सुरक्षा व्यवस्था में सुधार।
- **मध्यम अवधि के उपाय:**
  - » रात्रि पाली में सुरक्षा प्रोटोकॉल, जिसमें सुरक्षित परिवहन और आवास की व्यवस्था शामिल हो।
  - » यौन उत्पीड़न या कार्यस्थल पर हिंसा से जुड़े मामलों के समाधान के लिए अस्पतालों में आंतरिक शिकायत समितियों का गठन।
  - » दूरस्थ और खराब नेटवर्क वाले क्षेत्रों में संचार को सुदृढ़ करने के लिए मोबाइल नेटवर्क का संवर्धन।
- **दीर्घकालिक उपाय:**
  - » संकट की स्थिति में नेतृत्व प्रदान करने के लिए वरिष्ठ चिकित्सक की उपस्थिति सुनिश्चित करना।
  - » किसी भी चिकित्सा आपात स्थिति से निपटने के लिए रात्रि पाली में आपातकालीन इकाइयों में वरिष्ठ निवासियों की उपस्थिति।
  - » स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की सुरक्षा और समग्र सुरक्षा के लिए सरकारी पहलों और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सार्वजनिक चेतना बढ़ाना।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

20 November 2024

भारत–नाइजीरिया सामरिक साझेदारी

संदर्भ: हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नाइजीरिया की यात्रा पूरी की, जोकि 17 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली नाइजीरिया यात्रा थी। यह यात्रा प्रधानमंत्री की तीन देशों की यात्रा का हिस्सा थी, जिसमें 17 से 21 नवंबर, 2024 तक ब्राजील और गुयाना का दौरा भी शामिल था।

नाइजीरिया यात्रा से मुख्य बिंदु:

- **सामरिक साझेदारी:** भारत और नाइजीरिया ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को सामरिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ाया है, जिसमें रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, स्वास्थ्य, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया। यह कदम दोनों देशों के बीच सहयोग को और सुदृढ़ बनाने के लिए उठाया गया है।
- **मानवीय सहायता:** नाइजीरिया में आई विनाशकारी बाढ़ के दौरान, भारत ने 20 टन मानवीय सहायता की घोषणा की। यह सहायता नाइजीरिया में राहत प्रयासों को मजबूत करने के लिए थी और संकट के समय भारत की सहायता की प्रतिबद्धता को उजागर करती है।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** दोनों देशों ने सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रमुख समझौतों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए, जिनमें:
  - » सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम
  - » सीमा शुल्क सहयोग
  - » सर्वेक्षण सहयोग इन समझौतों से दोनों देशों के बीच मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों की स्थापना होगी।
- **वैश्विक दक्षिण सहयोग:** प्रधानमंत्री मोदी और नाइजीरिया के राष्ट्रपति टीनूबू ने वैश्विक दक्षिण की विकास आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने हेतु सहयोग की दिशा में काम करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों नेताओं ने साझा वैश्विक चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए एक समावेशी वैश्विक व्यवस्था बनाने पर ध्यान केंद्रित किया।

प्रधानमंत्री मोदी को सम्मान:

- प्रधानमंत्री मोदी को द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के उनके प्रयासों के लिए नाइजीरिया के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान, ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर (GCON) से सम्मानित किया गया।

भारत–नाइजीरिया संबंधों के बारे में:

- **ऐतिहासिक संबंध:** भारत ने अफ्रीकी देशों के स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत ने 1958 में अफ्रीका में अपना राजनयिक मिशन स्थापित किया था, जोकि 1960 में नाइजीरिया के ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र होने से दो साल पहले था।
- **सैन्य और क्षमता निर्माण:** स्वतंत्रता के बाद, भारत ने नाइजीरिया को नाइजीरियाई रक्षा अकादमी (NDA) और पोर्ट हरकोर्ट में नौसेना कॉलेज जैसे सैन्य संस्थानों की स्थापना में सहायता की। भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) पहल के तहत भारतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 1964 से नाइजीरिया की रक्षा और नागरिक क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण रहे हैं।

- **वाणिज्यिक संबंध:** भारतीय व्यवसायों ने नाइजीरिया में लगभग 15 बिलियन डॉलर का निवेश किया है, जिससे भारत नाइजीरिया का अग्रणी निवेशक बन गया है, जिसका कुल निवेश आधार लगभग 20 बिलियन डॉलर है।
- **तेल व्यापार:** नाइजीरिया भारत को कच्चे तेल का एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता है, हालाँकि हाल के वर्षों में इसकी हिस्सेदारी कम हो गई है। 2020 में, नाइजीरिया भारत को कच्चे तेल का पाँचवाँ सबसे बड़ा विक्रेता था।
- **अफ्रीका में भारत की भूमिका:** चीन और अमेरिका के बाद भारत अफ्रीका का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। अफ्रीका के कुल व्यापार में इसकी हिस्सेदारी 6.4% है।

'मीथेन पर नजर: अदृश्य लेकिन अनदेखी नहीं' रिपोर्ट का चौथा संस्करण

सन्दर्भ: हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय मीथेन उत्सर्जन वेधशाला (IMEO) ने 'मीथेन पर नजर: अदृश्य लेकिन अनदेखी नहीं' रिपोर्ट का चौथा संस्करण जारी किया। यह रिपोर्ट वैश्विक मीथेन उत्सर्जन, जलवायु परिवर्तन पर उनके प्रभाव और इन उत्सर्जनों को कम करने के प्रयासों पर मूल्यवान जानकारी प्रदान करती है।

- यह रिपोर्ट वैश्विक मीथेन कटौती में तेजी लाने के लिए सरकारों, उद्योगों और अनुसंधान निकायों के साथ काम करते हुए विश्वसनीय और कार्रवाई योग्य डेटा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

- **ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव**

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

» मानव-जनित मीथेन उत्सर्जन वर्तमान तापमान वृद्धि के लगभग एक-तिहाई के लिए जिम्मेदार है।
» मीथेन को कम करना, निकट भविष्य में वैश्विक तापमान में कमी लाने के लिए सबसे प्रभावी और त्वरित रणनीतियों में से एक माना जाता है।

- **तेल और गैस क्षेत्र से उत्सर्जन**
  » तेल और गैस मीथेन साझेदारी 2.0 (OGMP 2.0), UNEP के नेतृत्व में एक प्रमुख पहल है, जिसमें इसके सदस्यों को मीथेन उत्सर्जन की रिपोर्ट करना अनिवार्य है।
  » हालांकि, OGMP 2.0 वर्तमान में वैश्विक तेल और गैस उत्पादन का केवल 42% ही कवर करता है, जो उद्योग-व्यापी रिपोर्टिंग में अंतर को उजागर करता है और विस्तारित भागीदारी की आवश्यकता पर बल देता है।
- **स्टील आपूर्ति श्रृंखला में उत्सर्जन**
  » धातुकर्म कोयला (मेटकोल) उत्पादन वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र के मीथेन उत्सर्जन के लगभग दसवें हिस्से के लिए जिम्मेदार है।
  » इस उत्सर्जन को न्यूनतम लागत पर कम किया जा सकता है, जिससे इस्पात उद्योग में जलवायु कार्रवाई के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर उत्पन्न होता है।
- **उत्सर्जन चेतावनियों पर खराब प्रतिक्रिया**
  » UNEP की मीथेन अलर्ट और रिस्पांस प्रणाली (MARS) प्रमुख मीथेन उत्सर्जन पर नजर रखने और सरकारों को सचेत करने के लिए उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग करती है।
  » 1,200 से अधिक MARS अधिसूचनाओं के बावजूद, केवल 1% पर ही ठोस प्रतिक्रिया या शमन कार्रवाई हुई है।
  » इससे सरकारों और ऑपरेटरों के लिए अधिक त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया का अवसर दिखाई देता है।

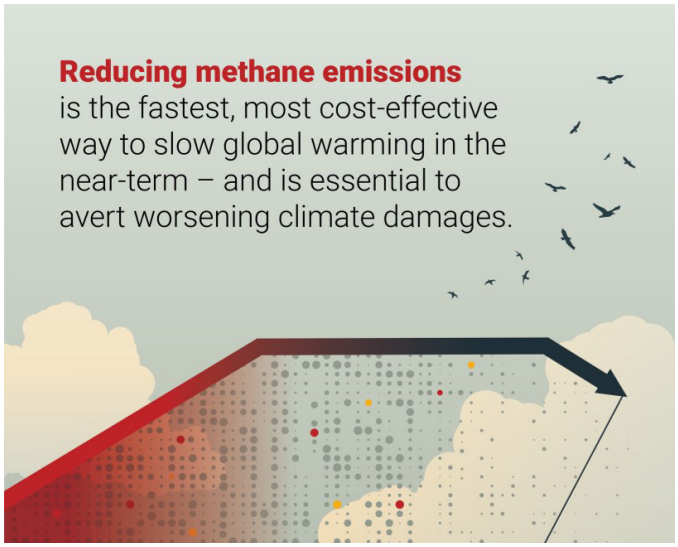

मीथेन उत्सर्जन कम करने की पहल:

- **वैश्विक पहल**
  » **वैश्विक मीथेन प्रतिज्ञा:** मीथेन उत्सर्जन को कम करने के लिए देशों और कंपनियों द्वारा की गई वैश्विक प्रतिबद्धता।
  » **जलवायु एवं स्वच्छ वायु गठबंधन (CCAC):** अल्पकालिक जलवायु प्रदूषकों (SLCFs) में मीथेन को कम करने के लिए साझेदारी।
  » **ग्लोबल मीथेन एलायंस:** मीथेन शमन को बढ़ावा देने के लिए देशों और उद्योगों को एकजुट करने वाली वैश्विक पहल।
- **भारत में पहल**
  » **जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (एनआईसीआरए):** मीथेन उत्सर्जन को कम करने वाली कृषि पद्धतियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
  » **राष्ट्रीय पशुधन मिशन:** इसका उद्देश्य पशुधन से मीथेन उत्सर्जन को न्यूनतम करते हुए पशुधन उत्पादकता को बढ़ाना है।
  » **गोबर-धन योजना:** जैविक अपशिष्ट से बायोगैस के उत्पादन को प्रोत्साहित करती है, जोकि मीथेन उत्सर्जन को कम करती है।
  » **राष्ट्रीय बायोगैस और जैविक खाद कार्यक्रम:** यह कार्यक्रम जैविक अपशिष्टों, जैसे खाद्य अपशिष्ट, गोबर, कृषि अवशेष, आदि से बायोगैस उत्पादन को प्रोत्साहित करता है, जिससे मीथेन उत्सर्जन में कमी आती है और स्वच्छ ऊर्जा का स्रोत मिलता है।

मीथेन के बारे में:

- मीथेन एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, जोकि 20 वर्ष की अवधि में CO_2 से 86 गुना अधिक शक्तिशाली है।
- इसका वायुमंडलीय जीवनकाल लगभग 12 वर्ष है, जिससे इसे CO_2 जैसी दीर्घकालिक गैसों की तुलना में कम करना आसान है।
- 60% से अधिक मीथेन उत्सर्जन मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होते हैं, जिनमें प्रमुख योगदान है:
  » कृषि (पशुधन पाचन और चावल के खेत)।
  » जीवाश्म ईंधन (प्राकृतिक गैस निष्कर्षण, तेल उत्पादन, कोयला खनन)।
  » अपशिष्ट (लैंडफिल और अपशिष्ट उपचार संयंत्र)।

जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि पहल (एफएफ-एनपीटी)

सन्दर्भ: हाल ही में जीवाश्म ईंधन अप्रसार संधि (एफएफ-एनपीटी) ने जलवायु परिवर्तन को रोकने हेतु परमाणु हथियारों की तरह जीवाश्म ईंधन के उत्पादन और उपयोग पर नियंत्रण का समर्थन किया है। इस पहल को विभिन्न देशों, संगठनों और व्यक्तित्वों से महत्वपूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ है।

- इस संधि का उद्देश्य जीवाश्म ईंधनों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना, नवीकरणीय ऊर्जा के लिए वैश्विक परिवर्तन सुनिश्चित करना, तथा जीवाश्म ईंधन उद्योगों पर निर्भर श्रमिकों और समुदायों को सहायता प्रदान करना है।
- यह संधि समानता पर केंद्रित है और यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी राष्ट्र, श्रमिक या समुदाय परिवर्तन में पीछे न छूट जाए।

एफएफ–एनपीटी के मुख्य उद्देश्य:

- **अप्रसार:** जीवाश्म ईंधन उत्पादन (कोयला, तेल, गैस) के विस्तार को रोकना।
- **निष्पक्ष चरण-समाप्ति:** निष्पक्ष और न्यायसंगत दृष्टिकोण के साथ वर्तमान जीवाश्म ईंधन निष्कर्षण को समाप्त करना।
- **न्यायोचित परिवर्तन:** नवीकरणीय ऊर्जा को तेजी से अपनाना और जीवाश्म ईंधन से अर्थव्यवस्थाओं में विविधता लाना।

एफएफ–एनपीटी की पृष्ठभूमि:

- **लॉन्च:** 2016 में संकल्पना की गई, आधिकारिक तौर पर 2019 में लॉन्च किया गया।
- **पेरिस समझौते की आलोचना:** पेरिस समझौते में जीवाश्म ईंधन उत्पादन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया, जिसे एफएफ-एनपीटी में सुधार करने का लक्ष्य रखा गया।
- यह पहल पेरिस समझौते के लगभग उसी समय शुरू की गई थी, जिसमें जीवाश्म ईंधन में कटौती के लिए बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता पर बल दिया गया था।

अनुमोदन और समर्थन:

- जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील 13 छोटे द्वीपीय विकासशील राज्य (SIDS), जैसे वानुअतु, तुवालु, फिजी, सोलोमन द्वीप और टोंगा, एफएफ-एनपीटी का समर्थन करते हैं।
- एक बड़े कोयला निर्यातक देश कोलंबिया ने दिसंबर 2023 में एफएफ-एनपीटी का समर्थन किया।
- COP29 (2024) में 10 और देश इस चर्चा में शामिल हुए, हालांकि उनके नाम सार्वजनिक नहीं किए गए।

वित्तीय संस्थान:

- 70 स्थायी बैंकों के नेटवर्क ग्लोबल अलायंस फॉर बैंकिंग ऑन वैल्यूज ने घोषणा की है कि 25 सदस्य बैंकों ने इस पहल का समर्थन किया है, जो वित्तीय संस्थानों द्वारा पहला सामूहिक समर्थन है।

वैज्ञानिक प्रमाण और तात्कालिकता:

- COP29 (2024) में एफएफ-एनपीटी के अध्यक्ष त्जेपोराह बर्मन ने इसकी तात्कालिकता पर प्रकाश डाला:
  - » अनुमान है कि 2024 में जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन 2015 के मुकाबले 8% अधिक होगा।
  - » प्रमुख जीवाश्म ईंधन उत्पादक देश 2030 तक जीवाश्म ईंधन उत्पादन में 110% की वृद्धि करने की योजना बना रहे हैं, जो वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित रखने के लक्ष्य के विपरीत है।
  - » यदि वर्तमान नीतियां जारी रहीं, तो विश्व 3°C तापमान वृद्धि की ओर बढ़ेगा, जिसके परिणामस्वरूप विनाशकारी जलवायु प्रभाव होंगे।

एफएफ–एनपीटी के समक्ष चुनौतियाँ:

- वित्तीय सहायता की उपलब्धता विकासशील देशों के लिए प्रमुख चुनौती बनी हुई है, जो जीवाश्म ईंधन पर अत्यधिक निर्भर हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील हैं।
- एफएफ-एनपीटी में विकासशील देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए एक नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य के निर्माण का प्रस्ताव है, जो पेरिस समझौते जैसे मौजूदा जलवायु ढांचे का पूरक होगा।

भारत की स्थिति:

- भारत एफएफ-एनपीटी में व्यापक रूप से शामिल नहीं हुआ है।
- भारत और इंडोनेशिया जैसे जीवाश्म ईंधन पर निर्भर बड़े देशों का इस संधि की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।
- भारत, जहां 2024 में जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन में 4.6% की वृद्धि होने की संभावना है, इस संधि से न्यायसंगत जलवायु वित्त और नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने के लिए समर्थन प्राप्त कर सकता है।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

20 November 2024

पॉवर पैक्ड न्यूज

तुलसी गैबार्ड की नियुक्ति

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने तुलसी गैबार्ड को संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय खुफिया निदेशक (डीएनआई) नियुक्त किया है।
- 43 वर्षीय तुलसी गैबार्ड अमेरिकी सेना की रिजर्विस्ट और पूर्व डेमोक्रेटिक कांग्रेसवुमन हैं। 2002 में, वह हवाई राज्य विधानमंडल के लिए चुनी जाने वाली सबसे कम उम्र की महिला बनीं। 2012 में, उन्होंने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के लिए चुनी गई पहली हिंदू सदस्य के रूप में इतिहास रचा और 2013 से 2021 तक हवाई का प्रतिनिधित्व किया। कांग्रेस में उनका कार्यकाल विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर केंद्रित रहा।

- यह नियुक्ति सीनेट की मंजूरी के अधीन है। यदि उनकी नियुक्ति की पुष्टि हो जाती है, तो गैबार्ड 70 बिलियन डॉलर के बजट की देखरेख करेंगी और 18 खुफिया एजेंसियों का प्रबंधन करेंगी, जिससे वह अमेरिकी खुफिया समुदाय में प्रमुख व्यक्तियों में से एक बन जाएंगी।
- डीएनआई के रूप में, गैबार्ड राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए एजेंसियों में खुफिया प्रयासों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। उनकी नियुक्ति सार्वजनिक सेवा और सैन्य नेतृत्व में उनके व्यापक अनुभव को उजागर करती है, जो अमेरिकी खुफिया अभियानों के भविष्य को आकार देने की उनकी क्षमता पर जोर देती है।

ओरिएंटल पाइड हॉर्नबिल

- हाल ही में असम के मोरीगांव जिले के मायोंग गाँव के ग्रामीणों ने ओरिएंटल पाइड हॉर्नबिल (Anthracoceros Albirostris) के संरक्षण के लिए सफल सामुदायिक प्रयास किया है। यह पक्षी भारतीय उपमहाद्वीप सहित उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है और यह बुसेरोटिडे परिवार का सदस्य है।

- भारत में हॉर्नबिल की नौ प्रजातियां मौजूद हैं, जिनमें से केवल ओरिएंटल पाइड हॉर्नबिल को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (1972) की अनुसूची II में सूचीबद्ध किया गया है, जबकि अन्य को अनुसूची I में रखा गया है।
- ग्रेट हॉर्नबिल, जोकि अरुणाचल प्रदेश और केरल का राज्य पक्षी है, संकटग्रस्त प्रजाति है। हॉर्नबिल बीज फैलाने में मदद करते हैं और उन्हें स्थानीय संस्कृतियों में महत्व दिया जाता है, जैसे नागा समुदाय, जो इनकी श्रद्धा में हॉर्नबिल महोत्सव मनाते हैं।
- संरक्षण प्रयासों के माध्यम से पारिस्थितिकी पर्यटन को भी बढ़ावा मिला है, जिससे पक्षी देखने वाले, शोधकर्ता और छात्र आकर्षित होते हैं। हालांकि, आवास का नुकसान, शिकार और पक्षी के अंगों का प्रयोग, हॉर्नबिल की आबादी के लिए महत्वपूर्ण खतरे बने हुए हैं।

ज्योति सुरेखा वेन्नम ने लक्जमबर्ग में जीटी ओपन में स्वर्ण पदक जीता

- भारतीय तीरंदाजी चौंपियन ज्योति सुरेखा वेन्नम ने लक्जमबर्ग में आयोजित जीटी ओपन में महिलाओं की कंपाउंड स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। ज्योति ने तीरंदाजी में अपनी निरंतर फॉर्म और सटीकता का प्रदर्शन करते हुए बेल्जियम की सारा प्रील्स को 147-145 के स्कोर से हराया।

- ज्योति, वर्तमान एशियाई खेलों की चौंपियन हैं, ने फाइनल में शानदार कौशल का प्रदर्शन किया। जीटी ओपन में उनका प्रदर्शन उनकी बढ़ती उपलब्धियों में एक और महत्वपूर्ण कड़ी है। पुरुषों की कंपाउंड स्पर्धा में भारतीय तीरंदाज अभिषेक ने रजत पदक जीता, लेकिन नीदरलैंड के माइक स्क्लोजर से हार गए, जिन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- भारत की शीर्ष तीरंदाजों में से एक के रूप में सुरेखा की प्रतिष्ठा ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर तीरंदाजी में देश की बढ़ती ताकत को उजागर किया है। उनकी उपलब्धियाँ युवा एथलीटों को प्रेरित करती हैं और वैश्विक खेल प्रतियोगिताओं में भारत की मजबूत उपस्थिति में योगदान देती हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com